एक विद्यालय का रूपान्तरण

एम वल्ली और के गांधीमती

पुदुकुप्पम के सरकारी प्राथमिक विद्यालय का रूपान्तरण इस बात का जगमगाता उदाहरण है कि किस प्रकार जुनून, रचनात्मकता और सामुदायिक सहभागिता से किसी संस्था को पुनर्जीवित किया जा सकता है। जो विद्यालय बन्द होने की कगार पर था, वही विद्यालय अब अकादमिक रूप से एक बेहतर केन्द्र के रूप में उभरा है।

चित्र 1 : आज़ादी, आनन्द और आत्मविश्वास से लबरेज़ बचपन

पुदुचेरी के एक छोटे-से तटीय गाँव पुदुकुप्पम के बीचोबीच एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय था जो बन्द होने की कगार पर था। इस विद्यालय में केवल 16 विद्यार्थी नामांकित थे। अतः शिक्षा निदेशालय को लगा कि यह विद्यालय समुदाय के लिए ज़्यादा फ़ायदेमन्द नहीं है, और इसलिए इसे पास के एक विद्यालय के साथ मिला देना चाहिए। लेकिन इस निर्णय ने एक असाधारण परिवर्तन को जन्म दिया जिसका नेतृत्व एक भावुक शिक्षक और एक समर्पित टीम ने किया। इन लोगों ने तय किया कि वे अपने विद्यालय को गुमनामी के अँधेरे में खोने नहीं देंगे।

यदि एक संस्था के रूप में किसी विद्यालय को प्रभावी ढंग से कार्य करना है और प्रगति करनी है तो इसके लिए कई संसाधनों की आवश्यकता होती है। मसलन, एक अच्छा बुनियादी ढाँचा, कुशल मानव संसाधन, समर्पित शिक्षक, मज़बूत नेतृत्व और सबसे महत्त्वपूर्ण, वहाँ के समुदाय की सद्भावना। सरकारी विद्यालय अकसर असन्तोषजनक / निम्नस्तरीय शिक्षा प्रदान करने की ग़लत धारणा का शिकार हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप नामांकन कम हो जाता है, और अन्ततः या तो उन्हें बन्द कर दिया जाता है या उनका विलय कर दिया जाता है। इस विद्यालय का भी यही हश्र होने वाला था। यह एक प्रेरणादायक कहानी है कि कैसे एक संघर्षरत विद्यालय ने इस ग़लत धारणा को दूर किया, शिक्षा को फिर से परिभाषित किया, और अपने विद्यार्थियों व समुदाय के लिए उम्मीद की किरण बन गया।

समुदाय और विद्यालय के बीच की खाई को पाटना

सालों से गाँव वाले यह मानते आ रहे थे कि सरकारी विद्यालय निजी विद्यालयों की तुलना में निम्न स्तर की शिक्षा प्रदान करते हैं। सुरक्षा सम्बन्धी चिन्ताएँ, पुरानी शिक्षण पद्धतियाँ और बुनियादी ढाँचे की कमी के कारण अभिभावक अपने बच्चों का

नामांकन कराने से और भी ज़्यादा हिचकिचाते थे। सरकारी विद्यालयों को अकसर उन विद्यार्थियों के लिए एक अन्तिम विकल्प के रूप में देखा जाता था जो अकादमिक या सामाजिक रूप से संघर्ष करते थे। इसलिए विद्यालय को पुनर्जीवित करने की दिशा में पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण क़दम यह था कि इस धारणा को बदला जाए।

विद्यालय ने इस दृष्टिकोण को बदलने का दृढ़ संकल्प लिया, और एक आकर्षक एवं गतिशील शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए एक महत्त्वाकांक्षी मिशन शुरू किया। केवल कक्षा शिक्षण पर ध्यान देने की बजाय, स्टाफ़ ने विद्यालय और गाँव वालों के बीच की खाई को पाटने के लिए समुदाय-संचालित कार्यक्रमों और गतिविधियों की एक शृंखला शुरू की। इसमें वार्षिक समारोह, खाद्य समारोह, सीखने का समारोह, वाचन समारोह, विज्ञान मेला, *तिरुक्कुरल* (पवित्र श्लोक) प्रतियोगिताएँ, किसान दिवस समारोह, कला प्रदर्शनी, खेल प्रतियोगिताएँ, आदि शामिल थीं।

इन गतिविधियों ने न केवल विद्यालय के जीवन्त माहौल को दर्शाया, बल्कि सरकारी शिक्षा के प्रति समुदाय की रुचि को भी फिर से जगाया। अब अभिभावक और गाँव वाले विद्यालय को एक असफल संस्था की बजाय एक बेजोड़ केन्द्र के रूप में देखने लगे।

लोकप्रिय कार्यक्रमों द्वारा समुदाय को जोड़ना

विद्यालय ने समुदाय को विद्यालय से जोड़ने, और दोनों के बीच एक मज़बूत तालमेल बनाने के लिए कई तरह की गतिविधियों का आयोजन किया। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

फ़ूड फ़ेस्टिवल

पारम्परिक भोजन का जश्न मनाने, और खाने की स्वस्थ आदतों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित फ़ूड फ़ेस्टिवल एक ऐसा वार्षिक कार्यक्रम बन गया है जिसका इन्तज़ार सभी बहुत उत्साह के साथ करते हैं। अभिभावकों ने घर पर बने व्यंजनों का प्रदर्शन किया, पोषण के महत्त्व पर ज़ोर दिया और विद्यार्थियों को जंक फ़ूड से होने वाले नुक़सान के बारे में बताया। इस उत्सव में वस्तु विनिमय प्रणाली (बार्टर सिस्टम) भी थी। इसमें गाँव के लोगों ने खाद्य पदार्थों का आदान-प्रदान किया जिससे सामुदायिक बन्धन मज़बूत हुए।

सीखने का समारोह

इस समारोह से यह ग़लतफ़हमी दूर हो गई कि सरकारी विद्यालयों में केवल रटने पर ही ध्यान दिया जाता है। ओरिगेमी एवं क्राफ़्ट, मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने और कहानी सुनाने जैसी गतिविधियों ने विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता दिखाने का अवसर दिया। अभिभावक अपने बच्चों की प्रतिभा देखकर हैरान रह गए, और विद्यालय की शिक्षण पद्धति पर उनका भरोसा और मज़बूत हुआ।

विद्यार्थी दिवस समारोह

विद्यार्थी दिवस पर, कक्षा दो के एक विद्यार्थी ने राज्य स्तरीय पठन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता। इस उपलब्धि को गाँव में बैनर लगाकर, और गाँव भर में घोषणा करके प्रचारित किया गया। इससे विद्यालय की प्रतिष्ठा और बढ़ गई। अभिभावकों को अपने बच्चों के सफलता समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया जिससे उनमें भागीदारी और गर्व की गहरी भावना पैदा हुई।

स्वतंत्रता दिवस परेड

स्वतंत्रता सेनानियों की वेशभूषा में सजे विद्यार्थियों ने शानदार परेड में भाग लिया। इस परेड ने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, और वे विद्यालय के पुनरुत्थान पर आश्चर्यचकित हो गए। ऐतिहासिक घटनाओं के नाटकीय मंचन ने अमिट छाप छोड़ी, और समुदाय ने विद्यालय की सराहना की, अतः इसकी गतिविधियों में और अधिक रुचि उत्पन्न हुई।

तिरुक्कुरल प्रतियोगिता

तिरुक्कुरल सराहना प्रतियोगिता में भागीदारी एक और निर्णायक क्षण था। एलकेजी और यूकेजी के विद्यार्थियों ने *तिरुक्कुरल* को इतने सही तरीक़े से याद करके सुनाया कि सभी हैरान रह गए। इस प्रदर्शन के लिए उन्हें प्रतिष्ठित '*तिरुक्कुरल* उपलब्धि' पुरस्कार मिला।

चित्र 2 : अपने बनाए प्रोजेक्ट के बारे में बताते विद्यार्थी

चित्र 3 : अपने काम को प्रदर्शित करते विद्यार्थी

पोंगल त्योहार

विद्यालय में किसान दिवस के उपलक्ष्य में पोंगल उत्सव का आयोजन किया गया। इस उत्सव में अभिभावकों ने बड़ी संख्या में भागीदारी की। कार्यक्रम में स्थानीय किसानों को सम्मानित किया गया, और विद्यार्थियों ने किसान विषय पर आधारित गाने एवं नृत्य प्रस्तुत किए। विद्यालय परिसर को पारम्परिक रूप से सजाया गया था जो गाँव की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता था।

वार्षिकोत्सव

विद्यालय का वार्षिकोत्सव भी एक शानदार आयोजन सिद्ध हुआ। इस उत्सव में अभिभावकों और गाँव वालों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अभिभावकों ने उपहार ख़रीदने, सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार करने, और विद्यालय को सजाने में अपना योगदान दिया। चार घण्टे के समारोह में रंगारंग कलात्मक प्रदर्शन हुए जिनसे समुदाय के मन में विद्यालय का स्थान और ऊँचा हुआ।

चुनौतियाँ

इन कार्यक्रमों के आयोजन में कई चुनौतियाँ सामने आईं। जब हमने पहला विज्ञान मेला आयोजित किया था तो इसने समुदाय का ज़्यादा ध्यान आकर्षित नहीं किया, लेकिन अब यह एक सफल वार्षिक आयोजन है। मैंने सभी विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया था। इसके आयोजन के लिए हमने कुछ सामग्री भी ख़रीदी थी। चूँकि अभिभावकों ने मुझसे अपने बच्चों के प्रोजेक्ट बनाने में सहायता करने को कहा था, इसलिए हमने विद्यालय के समय में मिलकर काम किया। मेरी कक्षा में, हमने ऊपरी दीवार पर सभी नौ ग्रहों को प्रदर्शित किया, और सौरमण्डल को जीवन्त बनाने के लिए रंगीन रोशनी एवं गेंदों का प्रयोग किया। विद्यार्थियों ने बड़े गर्व के साथ अपनी बनाई हुई चीज़ों का प्रदर्शन किया। इससे पूरा कमरा उत्साह और आश्चर्य से भर गया।

किन्तु प्रदर्शनी वाले दिन न तो गाँव वाले आए न ही अभिभावक। केवल शिक्षक, निरीक्षण अधिकारी और 16 विद्यार्थियों में से केवल दो विद्यार्थियों के अभिभावक ही मौजूद थे। अगर लोग प्रदर्शनी देखने के लिए आएँगे ही नहीं तो भला यह उत्सव कैसा होगा! इस बात से हमें बहुत निराशा हुई। उस दिन हमने निर्णय लिया कि हम घर-घर जाकर अभिभावकों और गाँव वालों को विद्यालय में आकर विद्यार्थियों का काम देखने के लिए आमंत्रित करेंगे। धीरे-धीरे लोग आने लगे। विज्ञान मेले का प्रसारण टेलीविज़न पर भी किया गया, और जब अभिभावकों ने अपने बच्चों को समाचारों में देखा तो उन्हें बहुत गर्व हुआ। अगले दिन अभिभावक सुबह की सभा में आए, और अपना आभार व्यक्त किया। मेरे मन में तो जैसे उत्साह की अनगिनत तरंगें उठने लगीं... इस शो ने दर्शकों का मन मोह लिया था। विद्यालय में ऐसा कोई उत्सव पहले कभी नहीं मनाया गया था।

विद्यार्थियों के सीखने का प्रदर्शन

सरकारी विद्यालयों में लोगों का विश्वास बढ़ाने के लिए अकादमिक गतिविधियाँ और विद्यार्थियों का सीखना महत्त्वपूर्ण

चित्र 4 : सभी को सीखने के समान अवसर और सीखने का उत्साह

है। इसलिए अब हम विद्यार्थियों के अधिगम / सीखने को समुदाय के सामने प्रदर्शित करने पर भी ध्यान दे रहे हैं।

प्रिंट-रिच अधिगम स्थान

गहन अधिगम (इमर्सिव लर्निंग) के महत्त्व को समझते हुए विद्यालय ने अपनी कक्षाओं में प्रिंट-रिच वातावरण बना लिया है। दीवारों पर लगे रंग-बिरंगे चार्ट, विषय-विशेष प्रदर्शन और विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए पोर्टफ़ोलियो ने सीखने को एक इंटरैक्टिव अनुभव बना दिया। यह दृष्टिकोण विद्यालय तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने अभिभावकों को घर पर भी इसी प्रकार का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया।

पढ़ने का त्योहार (रीडिंग फ़ेस्टिवल)

रीडिंग फ़ेस्टिवल ने अनोखी चुनौतियाँ पेश कीं जिनसे विद्यार्थियों की सहभागिता और सीखने की क्षमता बढ़ी। इन चुनौतियों में मिरर रीडिंग, समाचार पढ़ना, रिवर्स या ज़िगज़ैग रीडिंग, तमिल और अँग्रेज़ी में कहानी की किताब पढ़ना, नक़ली / नाटकीय बाज़ार में नक़दी का लेन-देन करना और चीज़ों का वज़न करना शामिल है। शिक्षकों और ग्राम प्रधानों ने इस उत्सव की बहुत सराहना की। यूकेजी विद्यार्थी की 1,000 शब्दों को पढ़ने की क्षमता ने सभी को अचम्भित कर दिया।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर ध्यान देना

बुनियादी शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए, विद्यालय ने किंडरगार्टन और निम्न प्राथमिक कक्षाओं को फिर से सशक्त करने पर ध्यान दिया। कक्षाओं को जीवन्त, प्रिंट-रिच सीखने का स्थान बनाया गया जिसने युवा विद्यार्थियों की कल्पना को आकर्षित किया। अलग-अलग तरह की इंटरैक्टिव शिक्षण पद्धतियाँ शुरू की गईं। इनमें कहानी सुनाना; कठपुतली का खेल और नाटक; इंटरैक्टिव सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) उपकरण एवं दृश्य सहायक सामग्री; ड्रेस-अप और भ्रमण जैसी आकर्षक गतिविधियाँ; व्यक्तिगत अभ्यास पत्र और विषय-विशिष्ट नोटबुक आदि शामिल थे। अभिभावकों को मासिक कक्षा गतिविधियों का अवलोकन करने के लिए आमंत्रित किया गया। इससे पारदर्शिता और विश्वास की भावना पैदा हुई। सुबह की सभा और विद्यालय

के कार्यक्रमों में छोटे विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया जिनसे संस्था के साथ उनका जुड़ाव और मज़बूत हुआ।

> **किसी विद्यालय को प्रभावी ढंग से कार्य करना है और प्रगति करनी है तो इसके लिए कई संसाधनों की आवश्यकता होती है। मसलन, एक अच्छा बुनियादी ढाँचा, कुशल मानव संसाधन, समर्पित शिक्षक, मज़बूत नेतृत्व और सबसे महत्त्वपूर्ण, वहाँ के समुदाय की सद्भावना।**

महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

विद्यालय के इस नए दृष्टिकोण का फल जल्द ही मिल गया। विद्यार्थियों ने अकादमिक और पाठ्येतर गतिविधियों में बढ़िया प्रदर्शन किया। कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं : यूकेजी के विद्यार्थियों ने रेडियो प्रसारण पर *संगम साहित्य* से 99 फूलों के नाम बताए; 100 *तिरुक्कुरल* पेश करने के लिए प्रतिष्ठित 'तिरुवल्लुवर पुरस्कार' जीतना; विद्यार्थियों द्वारा रचित चित्र और शब्द पुस्तकें प्रकाशित करना; लगातार तीन वर्षों तक पठन प्रतियोगिताओं में राज्य स्तर पर अव्वल आना; और हस्तलेखन प्रतियोगिताओं में लगातार दो साल राज्य स्तर पर अव्वल रहना।

सामुदायिक विश्वास और बढ़ता नामांकन

यह आँकड़े एक दिलचस्प कहानी बयाँ करते हैं। शैक्षिक वर्ष 2017–18 में विद्यालय में मात्र 14 विद्यार्थी थे, और 2021–22 तक यह संख्या 57 हो गई थी। नामांकन बढ़ने का यह सिलसिला लगातार बना हुआ है। नामांकन में यह बढ़ोतरी संस्थान में समुदाय के नए विश्वास को उजागर करती है। जो अभिभावक पहले अपने बच्चों को विद्यालय भेजने में हिचकिचाते थे, वे अब इसकी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे हैं।

दृढ़ता का प्रमाण

पुदुकुप्पम के सरकारी प्राथमिक विद्यालय का रूपान्तरण इस बात का जगमगाता उदाहरण है कि किस प्रकार जुनून, रचनात्मकता और सामुदायिक सहभागिता से किसी संस्था को पुनर्जीवित किया जा सकता है। जो विद्यालय बन्द होने की कगार पर था, वही विद्यालय अब सीखने, सांस्कृतिक गौरव और अकादमिक रूप से बेजोड़ केन्द्र के रूप में उभरा है। यह यात्रा शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए एक प्रेरणा है, जो यह साबित करती है कि दृढ़ संकल्प और अभिनव सोच के साथ कोई भी विद्यालय चुनौतियों पर विजय प्राप्त कर सकता है, और पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत हो सकता है। इस विद्यालय की कहानी केवल किसी संस्था को बचाने के बारे में ही नहीं बताती, बल्कि यह तो शिक्षा को फिर से परिभाषित करने, विश्वास का पुनर्निर्माण करने, और एक ऐसा भविष्य बनाने के बारे में है जहाँ हर विद्यार्थी को बेहतर करने के अवसर मिलें।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

एम वल्ली पिछले 17 वर्षों से सरकारी विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका रही हैं। उनका मानना है कि शिक्षा को आनन्ददायक और विद्यार्थी-केन्द्रित होना चाहिए; इसे जिज्ञासा, रचनात्मकता और तर्कसंगत सोच को पोषित करना चाहिए। वे कक्षाओं को सुरक्षित स्थानों के रूप में देखती हैं जहाँ हर बच्चे की क्षमता को पहचाना और विकसित किया जाता है।

सम्पर्क : vallimani1922@gmail.com

के गांधीमती का शिक्षा के क्षेत्र में तीन दशकों का अनुभव है। उनका अनुभव क्षेत्र विद्यालयी कक्षाओं से बीएड कॉलेजों तक फैला हुआ है। वर्तमान में, वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, पुदुचेरी में सन्दर्भ व्यक्ति हैं। वे ऐसे शिक्षकों के साथ मिलकर काम करती हैं, जो परिवर्तनकारी सीखने की जगहों को बढ़ावा देते हैं और चिन्तनशील, शोध-आधारित शिक्षण प्रथाओं तथा निरन्तर विकास एवं शैक्षिक नवाचार के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करते हैं।

सम्पर्क : gandhimathy@azimpremjifoundation.org